ओम शांति,

हम सभी बाबा के पास भिन्न भिन्न लक्ष्य लेकर आये है लेकिन एक इम्पोर्टेन्ट लक्ष्य है जन्म जन्म का भाग्य बनाना, आप जरा इस पर विचार करें सभी चिंतन करें। एक बहोत अच्छा संकल्प सभी अपने को देंगे **भाग्य बनाने का बहोत सुंदर समय हमारे सामने आ गया है, हमें भाग्य बनाने का सम्पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त हो गया है, इतना ही नहीं भाग्य बनाने कि कलम भी बाबा ने हमारे हाथ में दे दी है तब हम क्या कर रहे है?** भाग्य हमारे हाथ में है इस समय, हमारा भाग्य जग गया है, केवल भाग्य ने करवट ही नहीं बदली है भाग्य पूरी तरह जग चूका है और हमारे हाथ में है सम्पूर्ण अवसर है जितना चाहे भाग्य बना लें। जिनका इस जन्म में भाग्य अच्छा नहीं रहा वोह विचार करें अब हम ऐसा भाग्य बनाएं जो हर जन्म में भाग्यवान बन कर रहे, सहज सफलता प्राप्त हो, सहज धन कि प्राप्ति हो, स्वास्थ्य अच्छा हो, परिवार अच्छे हो, परिवारों में प्रेम हो, अपनापन हो। एक अच्छे परिवार कि, एक अच्छे जीवन कि जो रुपरेखा हम बना सकते हो एक विज़न बनाएं हमारा हर जन्म ऐसा हो, हर बार हमें ऐसा ही जीवन मिले, ऐसे साथी मिले। देखो परिवार में क्या चाहिए? परस्पर स्नेह, सम्मान, सहयोग। कहीं भी यह तिन चीज होती है तो सम्पूर्ण सुख और संतुष्टि प्राप्त होती है, व्यक्तिगत में क्या चाहिए? अच्छा स्वस्थ, मनुष्य के पास अच्छा धन, अच्छी बुद्धि, अच्छा चरित्र, समाज में सम्मान, किसी का देश में सम्मान होगा, किसी का धर्म के फील्ड में सम्मान प्राप्त होगा।

**हमें श्रेस्ठ भाग्य प्राप्त हो जन्म जन्म उसको सम्पूर्ण बिज हम यहाँ डाल रहे है।** सोचो क्या क्या है? एक है स्वयं में शक्तियां भरना, योग से ना केवल विकर्म विनाश होंगे लेकिन हमें स्वयं में शक्तियां भी भरनी है, दूसरा अनेक योग्यताएं स्वयं में भरना, योग्यताएं अनेक है बिज रूप में यहाँ योग्यताएं भरेंगे तो जन्म जन्म अनेक योग्यताएं हमारे पास रहेगी, हमारे पास बुद्धि भी बहोत अच्छी रहे हर जन्म में, बुद्धि अविनाशी चीज है जैसी बुद्धि का निर्माण हम यहाँ करेंगे, जैसी बुद्धि सदा ही हमारे पास रही है परन्तु उसकी शक्तियां हमने नष्ट कर ली है। उसकी मूल स्थिति पर ले जाना बुद्धि के साथ ब्रेन काम करता है, मनुष्य का मस्तिक, किसीके पास बुद्धि भी बहोत अच्छी हो लेकिन मस्तिक बहोत कमजोर हो तो भी बुद्धि थिक काम नहीं कर पायेगी, किसीके पास मस्तिक बहोत सुंदर हो लेकिन बुद्धि कि शक्तियां बहोत कमजोर पड़ गई हो तो भी वोह बहोत बुद्धिमान नहीं रेह पायेगा। टेंसन होगी उसको, थोडा भी बुद्धि का प्रयोग करते ही थकान होगी, अशांति जैसी फिल होगी।

ब्रेन का निर्माण एक बड़ा सूक्ष्म विषय है, मेडिकल साइंस उसका उतर देगी लेकिन ब्रेन का सम्पूर्ण निर्माण आत्मा के वाइब्रेशन्स के प्रभाव से होगा है। तो हम अपने अंदर योग्यताएं बढ़ाएं, भाग्य कि बात बाबा कि दो बाते मुझे याद आ रही है **जिसके पास निमित्त भाव और निर्माण भाव बहोत ज्यादा है उनसे ही भाग्य का श्रेस्ठ निर्माण होता है**, बहोत अच्छी बात है में जब जब इसको पढता हूँ तो निश्चित रूप से चिंतन होता है भाग्य निर्माण का आधार निमित और निर्माण। यू तो भाग्य यज्ञ सेवा से बनता है, योग अभ्यास से बनता है, ज्ञान देने से बनता है, पुण्य कर्म करने से बनता है, दुसरो को सुख देने से भाग्य का निर्माण होता है लेकिन बाबा एक बहोत अच्छी बात कही थी कोई **रात दिन सेवा में भागदौड़ करें लेकिन यदि निमित भाव, निर्माण भाव और निर्मलता नहीं है तो केवल पांच परसेंट ही जमा होता है।**

तो यह जानते हुए, यह मानते हुए कि यहाँ सब कुछ परमातम शक्तियों के द्वारा हो रहा है, विचार करेंगे सभी इस बात पर बाबा करणकारवन हार है यह शब्द कोई नया नहीं है, कि बाबा ने ही बोला हो यह भक्ति में भी प्रचलित रहा था और आचार्यो ने बुद्धिमानो ने इस पर विवाद भी बहोत किया, कइयों ने मान लिया भगवान् ही सब कुछ करता है, सुख दुःख वही देता है, अच्छे बुरे काम उसकी प्रेरणा से हो रहे है। मेने एक ब्राह्मण से जब यह प्रश्न पूछा कि गीता में एक ऐसा श्लोक में एक ऐसा शब्द आ गया है में ही काम हूँ, भगवान् बोल रहे है, सृस्टि रचना में में ही काम हूँ। तो मेने उस

महामंडलेश्वर से पूछा काम विकार को तो गीता में बहोत बुरा माना है, महाशत्रु, सभी पापो का बिज फिर यह भगवान् कैसे बोल रहा है में काम हूँ, तो उसने घुमा फिराके के उतर दिया लोग ऐसा मानते रहे उसका उतर भी येही था कि सब कुछ भगवान् के प्रेरणा से होता है बुराई भी अच्छाई भी लोगो ने यह मान लिया। लेकिन इसका यथार्थ अर्थ केवल संगमयुग पर ही हम समज सकते है कि जब बाबा निचे आते है और जो उसके बच्चे बनते है, जिसका नाता उससे जुड़ जाता है उन आत्माओ के साथ उसकी शक्तियां काम करने लगती है। जो अपने को उसके समक्ष सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर देते है, वोह माध्यम बन जाते है उसके, **वोह जो महान कार्य कराना चाहता है संसार को बदलने का वोह उन आत्माओ के द्वारा करता है जो अपने को सम्पूर्ण रूप से उसको अर्पित हो जाते है।**

समर्पणता जो बहोत सूक्ष्म चीज है, उसकी का दूसरा जो स्वरुप हमारे सामने रहता है निमित भाव, सब कुछ तेरा हम केवल निमित है, तुम्हारी शक्तियां हमारे माध्यम से काम कर रही है, तुम्हारे गुण हमारे माध्यम से काम कर रहे है जिनको यह फिलिंग रहती है उनके लिए वोह करनकरावनहार है। बाकी ऐसा नहीं कि सब कुछ वही करा रहा है करते हम ही है यदि हम योग्य नहीं, यदि हमारी बुद्धि कि लाइन क्लीन और क्लियर नहीं, यदि हममें निमित भाव और समर्पण भाव नहीं तो बाबा हमसे कार्य करा ही नहीं पायेगा। जैसे हमारे साथ एक गायन का बहोत सुंदर यंत्र हो हम उसको बजाना भी जानते हो, लेकिन उसमे कुछ खराबी हो तो क्या करेंगे हम? कुछ नहीं कर सकते। बहोत अच्छा गिटार हो, सितार हो, बहोत अच्छे हारमोनियम हो और बहोत सारे जो यंत्र है तबला बहोत अच्छा बजते हो लेकिन जरा सा छेद हो गया हो दोनों में कोई कुछ नहीं कर सकेगा ना? हम भी अपने को पूरी तरह जब समर्पित कर देते है बाबा के आगे, अपनी बुद्धि को समर्पित कर देते है, पुरानी बुद्धि को, मेपन कि बुद्धि को, बुद्धि के अहम् को तो बाबा अपनी बुद्धि उसमें भर देता है उसको दिव्य बुद्धि कहते है। **बुद्धि समर्पण का अर्थ यह नहीं कि हमारे पास बुद्धि नहीं रहेगी, बुद्धि समर्पण का अर्थ है बुद्धि के अहम् को समर्पित करना।** पुराना जो बुद्धि का अहम् हमने भर रखा है, पुरानी मान्यताएं, पुराने विचार धाराएं इसको समर्पित कर देना तो बाबा सद्विवेक और दिव्य विवेक हमारे अंदर भर देता है।

तो हमें भाग्य निर्माण करना है सभी अपने अंदर दृढ़ संकल्प करें भाग्य बनाने का समय हाथ में आया है हमें सम्पूर्ण भाग्य बना देना है, पसंद है? माताओ को पसंद है? सम्पूर्ण भाग्य बनाना है नहीं तो लोक कहा करेंगे हमें भी कि जब भगवान् भाग्य बाँटने आया तुम कहा सोये हुए थे? क्या कर रहे थे तब तुम? कहेंगे ना? देखो बिना पढ़े लिखे लोक हम गांव में थे जब छोटे थे तब से यह बात सुनते आते थे किसी को देखते थे ना उसका भाग्य साथ नहीं देता तो लोग कहते थे भगवान् ने जब भाग्य बांटा तो सोये हुए थे क्या? कहाँ थे? अब हमें पता चलता है कि देखो इतनी सुंदर बात रही सृस्टि पर भगवान् भाग्य बाटने आया इतना विशाल काम हुआ कि हर व्यक्ति के अंतर मन में छप गयी कि भगवान् भाग्य बाटने आया था तो तुम कहा सो गए थे? तो हमारे घर में खेती होती है तो वोह एक बहोत अच्छी बात सुनते है कि जब किसान गए थे ना तो जब हमारा पहला व्यक्ति गया था ना भगवान् के पास तो भगवान् ने इतना सा गन्ना दिया था उसे और उसने खेती में बो दिया गाने से पैड हुआ फिर उसको काट काट बोये और अब बहोत गन्ने कि खेती होती है। देखो लोगो कि विचार धाराएं? भगवान् भाग्य बाँट रहा है, हम कहाँ बीजी है? ऐसा तो नहीं कि भगवान् ने भाग्य बांटने का कलम भी हमें दे दी हो और हम कलम को भी खो कर बैठे हो। खो जाती है ना कलम भी? इंक भी ख़तम कर दी हो। **सभी चेक करें अपने को भगवान् भाग्य बाँट रहा है तो हम कहीं उलझे हुए तो नहीं रेह गये है?** बहोत इम्पोर्ट बात है, बहोत समजदारी और विवेकशीलता कि बात है कि संगमयुग पर हम स्वयं को कहीं भी उलझाएं नहीं।

उलझ चूका है मनुष्य बहोत, आज संसार में देखने में आता है लोग अपनों से बहोत कष्ट पा रहे है, अपने अपनों को कष्ट दे रहे है यह कलयुग के अंत का स्पस्ट स्वरुप दिखाई दे रहा है। जिनसे बहोत प्यार किया, जिनकी जीवन भर

पालना कि, जिनके लिए अपना सर्वस्व कुर्बान किया अब वही समस्या का कारण बने हुए है। सभी माताएं बहोत अच्छी तरह जानती है, देख लो सभी माताएं कहीं आपके बच्चे आपको भाग्य निर्माण ना करने दे रहे हो, कहीं किसी का पति उनको भाग्य निर्माण ना करने दे रहा हो, कहीं मित्र सम्बन्धी भाग्य निर्माण में बाधक बन रहे हो तो यह तो कोई नहीं पूछेगा ना कि हमें उसने नहीं करने दिया तो कुछ कन्सेसन मिल जाएँ? यह तो नहीं होगा ना? कारण कोई नहीं पूछे गा इसलिए बाबा ने पिछली बार कहा था याद है? **कारण शब्द को हटाओ, जब तक यह कारण है तब तक मुक्ति चाहने वाले जो तुम्हारी और प्यासी नजरो से देख रहे है, है मुक्ति दाता हमें मुक्ति दो तो उन्हें मुक्ति नहीं दे पाओगे।** यह कारण तो हर एक के पास कुछ ना कुछ कारण है लेकिन जो मनुष्य कारणो से ऊपर उठ कर कारणो को निवारण करके अपने श्रेस्ठ पुरुषार्थ का मार्ग निकाल लें वही बुद्धिमान है। कारण बढ़ाएं विघ्न और दीवारें यह तो हर जगह कड़ी मिलेगी सब के साथ है, लेकिन हम अपना मार्ग स्वयं निकाल लें इसलिए पहली चेकिंग सभी करें और चेकिंग करने के बाद मार्ग निकलें। हम कहीं यदि उलझ गए है, समजते है ना उलझने का अर्थ? मन उलझ गया है, सम्बन्धियों ने उलझा दिए है, किसी भी कारण से कुछ करा नहीं पा रहे है, वोह जरा रास्ता निकालें। रास्ता निकल सकता है, हर व्यक्ति, हर आत्मा अच्छा पुरुषार्थ कर सकती है केवल पुरुषार्थ करने कि इच्छा होनी चाहिए।

आप सभी ने नहीं सुनी होगी वोह कहानी जगदीश भाई कि जो अब नहीं है यहाँ, कहाँ से उन्हें बाबा के द्वारा लिखने का वरदान मिला था? पार्टी आयी थी दिल्ही से उसमें कई भाई थे अच्छे पढ़े लिखे बाबा ने काम दिया कि यह काम कहीं बाबा को कुछ भेजना था लिख के, तो सभी बच्चे लिख के लाओ सभी ने तो यह सोचा कि कल लिख लेंगे, लाइट भी नहीं थी और जगदीश भाई ने यह सोचा कि भगवान् कि आज्ञा है लिख कर ही सोयेंगे। तो बहार चले गए जो खम्भे पे छोटा बल्ब जल रहा था उसपे तो बहोत कम होती थी ना तब? आज जैसे बड़ी बड़ी नहीं थी, खम्भे कि लाइट के निचे बैठ कर लिखा। भगवान् तो देख रहा था ना? बस राजी हो गए प्रभुजी और वरदान दे दिया वहीँ। तो जिसको पुरुषार्थ करना है, उसके लिए मार्ग है ही, बहानो का तो कोई अंत नहीं, बहाने कुछ भी दिए जा सकते है लेकिन जिसको करना है, जिसके पास दृढ़ इच्छा शक्ति है उसे बाबा कि बहोत मदद मिलती है। यह हम सब अनुभव करें जीवन में केवल इच्छा शक्ति हो तो कोई बाधा मनुष्य को रोक नहीं सकती। अपनी दृढ़ता कि, अपने लग्न कि, हम करना नहीं चाहती कमी रेह जाती है, थिक है ना बात? कोई करना चाहे उसको कोई नहीं रोक सकता। ना माया, ना परिस्थिति ना लौकिक सम्बन्धी कुछ नहीं और हम यह बात बाबा कि याद रखें स्व स्थिति से परिस्थियां स्वतः ही बदल जाती है। मनुष्य यह गलती कर रहा है कि वोह परिस्थियों के बदलने कि इन्तेजार कर रहा है, इन्तेजार नहीं करनी है। इस तरह परिस्थियां नहीं बदलेंगी, बहुतो के अनुभव सुनने में आते है परिस्थिति जटिल होती जाती है, परिस्थितियों को जितना भी इस तरह हटाएंगे वोह बढ़ती जायेगी। **परिस्थियां हटेगी श्रेस्ठ स्व स्थिति से और श्रेस्ठ स्व स्थिति बनेगी श्रेस्ठ स्वमान से। यह बहोत सुंदर कर्म बाबा ने बता दिया है, स्वमान स्व स्थिति का आधार स्व स्थिति से परिस्थिति बदल जायेगी।**

तो हम मन बनाएं करना है बाबा ने बोल दिया इस सीजन में यह जमा करने का बैंक अभी खुला है और अभी बंध भी हो जाएगा। यह सदा नहीं चलेगा बाकि सारे बैंक तो हो सकता है फ़ैल भी हो जाएँ लगता तो ऐसा ही है फ़ैल हो जायेंगे और संसार पर जैसे अमेरिका में पड़ी ना अभी मार ऐसा ही हो सकता है एक बार सारे संसार पर यह धनसम्पदा कि मार पड़ जाएँ, परेशान हो उठे मनुष्य और सोचने लगे सारे जीवन कि कमाई गई लेकिन यह अविनाशी कमाई जाने वाली नहीं। क्या क्या है यह अविनाशी कमाई, किस किस चीज को हमें बढ़ाना चाहिए जरा इस पर ध्यान दें। पहेली सब से बड़ी चीज जो हमारी कमाई का मूल हम कहें वही आधार और वही का स्वरुप है बहोत सुंदर महावाक्य है बाबा का - **संकल्प कि एनर्जी ही भाग्य कि एनर्जी है। जिसने संकल्प शक्ति जितनी ज्यादा इकट्ठी करली, जिसके संकल्प जितने महान हो गए**, दो चीजे है संकल्प शक्ति और संकल्पो का खजाना बहोत मुरलियां चली है इन दोनों पर संकल्पो का खजाना

यानि सुंदर विचार सुंदर संकल्प वोह हमारे लिए खजाना है।

हमें आनंद कौन देता है? एक सुंदर विचार। आनंद कौन छीन लेता है? एक नेगेटिव विचार। दुखी कौन करता है मनुष्य को? एक कमजोर विचार। सुख मिल जाता है एक सुंदर विचार आते ही। तो हम संकल्पो कि गति को भी धीमा करें इससे संकल्प शक्ति बढ़ती जायेगी कुछ योग का बल संकल्पो में भरेगा उससे संकल्प शक्ति बढ़ती जायेगी और संकल्पो का खजाना कहाँ मिलता है हमें रोज? मुरलियों से। **जैसा श्रेस्ठ संकल्पो का भण्डार हमारे पास है वैसा चारो युगो में किसी के पास नहीं हो सकता**, थिक बात है? रोज भण्डार मिल रहा है यह चीजे कल्पना बन कर रेह जायेगी इस सत्य कि खोज होती रहेगी, कितना सुंदर ज्ञान का भण्डार बाबा ने बहोत अच्छा कहा अभी मुरली में आ चूका है -यदि शास्त्रो में ज्ञान रत्न होते तो भारत बहोत साहूकार होता, ज्ञान रत्न ही तो नहीं है, कहानी है केवल, पूजा पाठ के, कर्म काण्ड के विधि विधान लिखे हुए है केवल। ज्ञान रत्न बहोत कम है जो है वोह भी छुप गए विस्तार में, गीता में बहोत अच्छी अच्छी बातें लिखी हुई है लेकिन छुप गया है विस्तार में।

तो हम सभी सब से पहला ध्यान देंगे संकल्प शक्ति और संकल्प के खजाने को जमा करने पर और इसके लिए यह अपने हाथ में है कि हम अपने मन को शांत रखें या व्यर्थ में दौड़ाते रहे यह सचमुच अपने हाथ में है। यदि मनुष्य सोच लें मुझे शांत रहना है तो ऐसा हो सकता है या नहीं? परिवारों में भी मनुष्य रेह सकता है शांत, मुझे शांत रहना है। और यदि वोह हर बात में उथल पुथल करें, रिएक्शन करें हर बात पर परेशान हो, हर छोटी बात में क्या क्यूँ करने लगे तो वोह शांत नहीं रेह पायेगा। हर एक के अपने हाथ में है शांत रहना। मुझे बाबा कि इस बार कि एक बात सब को याद दिलानी है सिंपल बात है लेकिन हम लोग जरा ज्ञान में आगे चलते चलते उनकी जो कि महत्त्व को भूल जाते है गीत बजा कौनसा गीत था? मौन कि शक्ति। तो बाबा ने कहा - **मुख मौन से भी सेवाओं में सहज सफलता प्राप्त होगी।** शांति कि शक्ति पर जो मुरली चली है तो सब से बड़ी शांति कि शक्ति जो है मन के संकल्पो को शांत करने से जो शक्ति प्राप्त होती है लेकीन वाचा को शांत करना भी शक्ति जमा करने का तरीका है। तब तो अच्छे अच्छे साधक लम्बा लम्बा समय मौन रखते है ना? चालीस रात, चालीस दिन एक साल किस किस ने दस साल, बारह साल भी मौन रखा शक्तियां जमा करने के लिए। ताकि मन कि गति भी धीमी हो, जितना हम बोलेंगे मन भी उतना ही फ़ास्ट चलेगा और हमारी शक्तियां भी नष्ट होंगी। बोलने से थोडा सा रस मिलेगा कुछ समय फिर रस ख़त्म हो जाएगा। सभी इस पर भी ध्यान दें योगियों कि सोभा है अंतर मुखता। बोल तो सभी रहे है, सारे संसार में लोग बहोत बोल रहे है, हम सभी अंतर मुखी हो जाएँ।

तो हम सभी अंतर्मुखी हो जाएँ। बड़ा सुख है पहेले तो हमारे यहाँ जहाँ तहां यह स्लोगन लिखा रहता था अंतर मुखी सदा सुखी, कम बोलेंगे तो कम सुनेंगे। तो हम शक्तियों को अपने अंदर जमा करें, योग से तो शक्तियां जमा होंगी ही उस पर बहोत ध्यान देना है परन्तु मन कि गति को शांत रखते हुए मुख को शांत रखते हुए भी हमें शक्तियां जमा करनी है। हमारे पास योगताएं बहोत रही है, जो आत्मा कि योगयताएं अविनाशी है, जो सतयुग में थी, त्रेता में थी, द्वापर में भी थी, सभी गहराई से विचार करें वोह अब भी बिज रूप में विद्यमान है। चाहे हमने उनको पूरी तरह खो दिया हो लेकिन उनके बिज नष्ट नहीं हुए वोह सभी योग्यताएं है, वोह महानताएं हम सब के अंदर ही छुपी हुई है हमें उन्हें जागृत करना है, भाग्य श्रेस्ठ बनाना है ना फिरसे? जागृत होंगी स्वमान से, श्रेस्ठ स्मृतियों से। इसलिए स्वमान, श्रेस्ठ स्मृतियाँ हमारी अंदर कि सोयी हुई योगयताओं को शक्तियों को जागृत करेंगी, यह बात ध्यान में रखते हुए हमें स्वमान का भी बहोत अच्छा अभ्यास करना चाहिए।

भाग्य बनाना है। **बाबा ने यज्ञ रच कर हमारे हाथ में दे दिया है, क्यूँ हमारे हाथ में दिया? इस विश्वास के साथ कि यह मेरे ब्राहमण बच्चे यज्ञ कि सम्पूर्ण संभाल करेंगे**, गीता में बहोत अच्छे शब्द है इसके बारें में ब्रहमा ने यज्ञ रच कर

ब्रह्मणो से कहा है वत्सो तुम इस यज्ञ से देवताओं को प्रसन्न करो और देवता तुम्हे मन इच्छित फल प्रदान करेंगे। तो देवता कौन? सब आने वाले देवता है ना? देवता कुल कि आत्माएं आ रही है ना यज्ञ में? हम उन्हें संतुष्ट करें यह बहोत बड़ा पुण्य है। जो भी हमारे पास बातें है हम अपनी सेवाओं से उन्हें संतुष्ट करें, वोह हमारे मेहमान भी होते है और वोह यज्ञ से बहोत कुछ प्राप्त करने भी आते है। जैसे हमारे घर में कोई मेहमान आयें तो हम सोचते है ना कि वोह नाराज हो के ना जाएं, खुश होक जाएँ। हमारे यज्ञ में भी मेहमान आते है, बाबा कहा करते थे सब से अधिक भाग्यवान वोह जिसके घर में ज्यादा मेहमान आयें। कोई तंग भी हो जाता है इतना पैसा कहाँ से लायेंगे? सारा दिन इन्हे चाय पिलाओ, पकोड़े खिलाओ, टोली खिलाओ तो कहां से इतना पैसा आएगा? परन्तु जिनका दिल खुला है उनके पास कोई कमी नहीं होती, जहाँ उदारता है, जहाँ सभी को संतुष्ट करने कि भावना है वहाँ कोई कमी नहीं होगी। ना घरो में होगी, ना यज्ञ में होगी। आज हम यज्ञ में यह सोचलें बहोत खर्च होता है लोग बहार से आते है हमें नहीं करना है, क्यूँ हम खर्च करें इतना? आएगा ही नहीं। इतनी उदारता दादी में हम सब ने देखि कितना दादी खुश करती थी आने वालो को? दादी थोडा ही सोचती थी यह कम हो जाएगा? बढ़ता ही जाएगा, सिद्धांत ही यह है। देने से, खिलाने से, दुसरो कि सेवा करने से सब कुछ बढ़ता है। हमारे भारत कि तो महान सभ्यता ही यह थी आप मेसे कई जानते होंगे लोग पहले एक भूखे को भोजन खिलते थे फिर खुद भोजन खाते थे अब वोह सब चीजे लोप हो गयी है क्यूंकि मनुष्य के अंदर बहोत स्वार्थ आ गया है। वोह सोचता है एक को भोजन खिलाएंगे इतना खर्च कौन करेगा, अब यह विचार हो गए है मनुष्य के। हमारी सभ्यता बहोत महान रही है भारत कि पहले बहुतो के नियम होते थे गरीब से गरीब का नियम होता था कि एक को पहले भोजन खिलाएं फिर हम भोजन खायेंगे।

तो हम सभी अपना भाग्य निर्माण करते है यज्ञ सेवा से। **जो सच्चे दिल से यज्ञ कि सेवा करते है, जो अपनी सेवाओं से दुसरो को संतुष्ट करते है, जो अपना भी त्याग कर के चाहे नींद का त्याग करना पड़े, चाहे अपने सुखो का त्याग करना पड़े जो दुसरो को सुख देते है उनका भाग्य बहोत अच्छा बन जाता है।** हमारे पास तन, मन, धन, वाचा और भी मनसा सब तरह कि सेवाएं है हम ज्ञान देकर भी सेवा करते है सब से बड़ा भाग्य दुसरो को भगवान् से मिला देना, सब से बड़ा भाग्य किसी आत्मा को पवित्र बना देना, किसी कि पवित्रता कि रक्षा करना, यह बहोत बड़ा पुण्य और बहोत बड़ा भाग्य है हमारा। इस तरह हम अपने भाग्य का निर्माण करें लौकिक में रहते हुए इस तरह जब कि हम बाबा के बच्चे बन गए है जब हम ऊपर से जुड़ गए है और ऊपर से जुड़ ने के साथ हम कौन हो गए? एक बहोत अच्छा स्वमान बाबा हम सब को देता है तुम हो गए पूर्वज। हम सभी पूर्वज है। तो पूर्वजो का काम है देखिये यह दोनों चीजे हमारे काम आएगी हम पुण्य कर्मो का बल भी संसार कि आत्मा को देंगे और पुण्य कर्मो के द्वारा अपने भाग्य का निर्माण भी करेंगे। तो बाबा का वोह महावाक्य याद करलें जरा तुम सभी पूर्वज हो, तुम्हारे पुण्य कर्मो फल सभी धर्मो कि आत्माओ को मिलता है इसलिए उसका फल भी तुम्हे पदमगुणा मिल जाता है। येही गति पाप कर्म के साथ भी है पूर्वज आत्मा यदि कोई पाप कर्म करती है तो उसका इफ़ेक्ट सभी संसार कि आत्माओ पर चला जाता है।

हम पुण्य कर्मो पर ध्यान दें, पुण्य कर्म सब से पहले पुण्य कर्म कि स्थिति पवित्रता, दुसरो को सुख देना, दुसरो को समय पर सहयोग देना और हम सब को बड़े बड़े पुण्य कर्म करने का अवसर अब मिलने जा रहा है, क्या? सभी ध्यान दें उस बात पर जो चर्चा हम करते आ रहे है पहले से भी कि विनाश काल के लिए हम अपने को तैयार करें और वोह तैयारी केवल हमारी अपने लिए नहीं होगी वोह तैयारी होगी विश्व को मदद करने कि। अब हम सब सुनते है बिहार में बहोत बुरा हाल हुआ बाढ़ से कितने मरें, कितने बेह गए उसकी बात तो छोडो लेकिन कितनी परेशानी, कितनी अशांति, कितना असहाय हो जाता है मनुष्य उस समय सर्कार कुछ नहीं कर सकती किसी को दोष देने से काम नहीं चलेगा, बीमारियां फ़ैल गई, घर उजड़ गए, लोगो कि संपंत्ति खेती नष्ट हो गई, कोई किसी को पूछने वाला नहीं रहा,

अनेक कष्टो से आत्माओ को गुजरना पड़ा वोह भी एक दो दिन नहीं कितना लम्बा काल मास गुजर गये। ऐसे में हमारे द्वारा आत्माको शांति का दान देना।

अब बीमारियां फ़ैल रही है, सरकारें दवाई भेज रहे है, कई साधन जुटाए जा रहे है लेकिन उनके बाद भी क्या कोई उन मनुष्यो के मन को शांत कर पाता है? उनका जो नष्ट हो गया उससे जो वोह पीड़ित है क्या उसको कोई शांत कर पाता है? यह काम करेंगे हम सब। इसलिए **इस समय संसार को सकास देना सब से बड़ा पुण्य कर्म है** कोई और सेवा ना करें, माताएं जो बहोत बुजुर्ग हो गयी वोह सोचती हो हमारे पास पैसा नहीं, हमारे पास समय नहीं, शरीर में शक्ति नहीं लेकिन सकास दें और सकास देने के लिए में एक छोटी सी विधि आपके सामने रख देता हूँ। कुछ भी ना करें आप इस स्वमान में स्थित होकर बैठ जाएँ में मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, बहोत अच्छा स्वरुप है यह संकल्प करें मेरे अंग अंग से शक्तियों कि, शांति कि, पवित्रता कि किरणे चारो और फ़ैल रही है। सकास मिलती रहेगी आत्माओ कि, आत्माओ को सकास जायेगी क्यूंकि हम पूर्वज है देखिये बड़ी सूक्ष्म गति है

- यदि हम इस स्मृति में स्थित होते है ध्यान देंगे में इष्ट देवी हूँ, इष्ट देव हूँ तो तुरंत हम जुड़ जाते है अपने जन्म जन्म के भक्तो से, हमारी सकास, हमारे वाइब्रेशन्स हमारे पुण्य कर्मो का बल उन सभी भक्त आत्माओ तक जाने लगता है।
- अगर हम अपने कोई स्वरुप में ले आते है में पूर्वज हूँ तो हम जुड़ जाते है सभी धर्मो कि अनेक आत्माओ से, हमारी सकास, हमारे वाइब्रेशन्स उनको जाने लगते है और
- यदि हम में से कोई इस स्वरुप में स्थित हो जाएँ में बाप सामान हूँ, तो हम जुड़ गयें सम्पूर्ण यूनिवर्स से इसमें प्रकृति आ गयी, जीव जंतु सब आगये हम जुड़ जाते है सम्पूर्ण विश्व से, जड़ चेतन सब से और हमारी सकास, हमारे वाइब्रेशन्स उन आत्माओ को जाने लगते है।

तो सभी बहोत अच्छा अभ्यास करें में मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, बहोत अच्छा स्वमान है इससे बहोत अच्छी जागृति अपने अंदर भी आएगी और हमारे वाइब्रेशन्स दूर दूर तक जाते रहेंगे। तो हम पुण्य कर्मो का खता बढ़ाएं। अब समय है भाग्य बनाने का पूरा समय भाग्य खायेंगे हम, पूरा कल्प, सतयुग और त्रेता तो हमें प्रारब्ध मिलेगी लेकिन जो संस्कार जो योग्यताएं हम यहाँ अपने में भर लेंगे वही द्वापर के बाद भी चलेंगे। मानलो इस समय हमने देने का संस्कार अपने अंदर भर लिया, देना है लेना कुछ नहीं है, तो हम द्वापर युग के बाद भी देते ही रहेंगे। हमारे पास इतनी सम्पन्नता होंगी कि हम देंगे यह बहोत सूक्ष्म संस्कार है। आज भी मुरली आ गया कि तुम्हे किसी से कुछ भी लेने कि इच्छा नहीं होनी चाहिए क्यूंकि बाबा हमारे अंदर राजै संस्कार पैदा करना चाहता है। लेते तो इस संसार में सभी है हम है देने वाले, ऐसे ही यदि हमने अपने जीवन को यहाँ सम्पूर्ण रूप से शांत कर लिया तो द्वापरयुग के बाद भी हम शांत रहेंगे। यदि हमारे अंदर यहाँ रहम का संस्कार भर गया, देखो बाबा बहोत जोर देते है रहमदिल बनो, यदि हमने यहाँ स्वयं को रहमदिल बनाया तो द्वापर से हम बहोत रहमदिल रहेंगे, हम सब को मदद करते रहेंगे।

ऐसे ही यहाँ हम बुद्धि का निर्माण कर रहे है सब से सुंदर बात है जो भी इस बात को समजलें ज्ञान चिंतन से, ज्ञान दान से, ज्ञान सुनने से हमारी बुद्धि दिनों दिन श्रेस्ठ होती जा रही है ना? यह बुद्धि का निर्माण है। हम योग से बुद्धि को शक्तिशाली बना रहे है और ज्ञान से बुद्धि को दिव्य कर रहे है। ज्ञान और पवित्रता जहाँ जुड़ जाती है वहाँ बुद्धि में दिव्यता आती है और योग से उसमें शक्ति भर जाती है तो यह शक्तिशाली और दिव्यबुद्धि जन्म जन्म हमारे साथ चलेगी, किसी भी जन्म में चाहे हम पढ़ें, चाहे हम कोई काम सीखेंगे, चाहे हमें कुछ काम करना पड़ेगा हम समाज के बिच रहेंगे, हम किसी बड़े पद पोजीसन पर रहेंगे देखने वालों को लगेगा कि यह व्यक्ति बहोत बुद्धिमान है, पढाई में भी हमें ऐसे महसूस होगा हम सफल है, लौकिक पढाई सभी पढ़ते है ना? कोई फर्स्ट क्लास रहे, कोई सेकंड क्लास, कोई

थर्ड क्लास कोई असफल हो गए पढ़ने में। बिज पड़ा संगमयुग पर इस समय तो हम अपने भाग्य का निर्माण कर रहे है सभी विचार करें फिर से अब बाबा कहा करते थे बिसो नाखुनो का जोर लगाकर श्रेस्ठ भाग्य का निर्माण करलें, किसी भी बात से रुके नहीं।

फिर में आखिर में वाही बात रिपीट कर रहा हूँ **कहीं स्वयं को उलझाएं नहीं, ना सेवाओं के फील्ड में, सेवा बिना उलझाएं भी बहोत अच्छी तरह कि जा सकती है, सेवाओं में उलझन है मनुष्य को किस चीज कि? स्वार्थ, मेपन।** ध्यान देंगे इस मनुष्य ने अपने स्वार्थ को पहचान लिया मेपन ही है और स्वार्थ को धीरे धीरे हटाते चलें उसका जीवन बहोत निर्मल हो जाता है, उसको सेवाओं में बहोत सफलता मिलती है, थोड़ी सेवा करने से ज्यादा भाग्य का निर्माण होता है, और यदि सेवा करने पर पुण्य कर्म करने पर मेने किया यह अहम जागृत हो गया तो सेवा नष्ट हो जाती है, उसका पुण्य नष्ट हो जाता है। इसलिए भक्ति में भी यह मान्यता रही निस्काम भाव से पुण्य कर्म करो, मदद भी करो तो निस्काम भाव से करो। आजकल तो लोग धर्म शाळा भी बनाते है ना? तो पहले ही इच्छा होती है जन्म जन्म मेरा नाम चलता रहे, एक मार्बल के पत्थर पर अच्छी तरह खुदवा खुदवा के लिखवा देना फलने शेठ ने धर्मशाला बनवाई थी ताकि जब तक धर्मशाला जीवित रहे तब तक मेरा नाम भी जिन्दा रहे। तो बनवाने के साथ कामना हो जाती है तो पुण्य भी शीण होने लगते है। हम सभी निस्काम भाव अपनाएंगे और भाग्य विधाता से सम्पूर्ण भाग्य लेंगे।

लास्ट एक बात और आपके सामने रख देता हूँ कभी आपको ऐसा महसूस हो कि भाग्य साथ नहीं दे रहा है, होता है मनुष्य को ऐसा महसूस तो एक बहोत अच्छे स्वमान का अभ्यास कर लेंगे में मास्टर भाग्य विधाता हूँ। सोया भाग्य जगने लगेगा, बिगड़ा हुआ भाग्य संवरने लगेगा, बुरे दिन अच्छे दिनों में बदलने लगेंगे साथ में इस ख़ुशी और नशे को भी जरा जागृत करेंगे में इस संसार में पद्मपदम भागयशाली हूँ, मनुष्य को यह नशा रहता नहीं जब भाग्य बिगड़ जाएँ लेकिन बाबा से हमें क्या क्या मिला है स्वयं भगवान् हमें मिला है इसलिए भला संसार में हमसे अधिक भाग्यवान और कौन हो सकता है? कम से कम इतनी स्मृति से अपने भाग्य को याद करेंगे और में मास्टर भाग्य विधाता हूँ यह स्वमान बहोत मदद करेगा।

**-: ओम शांति :-**

**-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-**

- ✓ भाग्य बनाने का बहोत सुंदर समय हमारे सामने आ गया है, हमें भाग्य बनाने का सम्पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त हो गया है, इतना ही नहीं भाग्य बनाने कि कलम भी बाबा ने हमारे हाथ में दे दी है तब हम क्या कर रहे है?
- ✓ हमें श्रेस्ठ भाग्य प्राप्त हो जन्म जन्म उसको सम्पूर्ण बिज हम यहाँ डाल रहे है।
- ✓ जिसके पास निमित्त भाव और निर्माण भाव बहोत ज्यादा है उनसे ही भाग्य का श्रेस्ठ निर्माण होता है, रात दिन सेवा में भागदौड़ करें लेकिन यदि निमित भाव, निर्माण भाव और निर्मलता नहीं है तो केवल पांच परसेंट ही जमा होता है।
- ✓ वोह जो महान कार्य कराना चाहता है संसार को बदलने का वोह उन आत्माओ के द्वारा करता है जो अपने को सम्पूर्ण रूप से उसको अर्पित हो जाते है।
- ✓ बुद्धि समर्पण का अर्थ यह नहीं कि हमारे पास बुद्धि नहीं रहेगी, बुद्धि समर्पण का अर्थ है बुद्धि के अहम् को समर्पित करना।
- ✓ सभी चेक करें अपने को भगवान् भाग्य बाँट रहा है तो हम कहीं उलझे हुए तो नहीं रेह गये है?
- ✓ कारण शब्द को हटाओ, जब तक यह कारण है तब तक मुक्ति चाहने वाले जो तुम्हारी और प्यासी नजरो से देख रहे है, है मुक्ति दाता हमें मुक्ति दो तो उन्हें मुक्ति नहीं दे पाओगे।

- ✓ परिस्थियां हटेगी श्रेस्ठ स्व स्थिति से और श्रेस्ठ स्व स्थिति बनेगी श्रेस्ठ स्वमान से। यह बहोत सुंदर कर्म बाबा ने बता दिया है, स्वमान स्व स्थिति का आधार स्व स्थिति से परिस्थिति बदल जायेगी।
- ✓ संकल्प कि एनर्जी ही भाग्य कि एनर्जी है। जिसने संकल्प शक्ति जितनी ज्यादा इकट्ठी करली, जिसके संकल्प जितने महान हो गए ।
- ✓ जैसा श्रेस्ठ संकल्पो का भण्डार हमारे पास है वैसा चारो युगो में किसी के पास नहीं हो सकता ।
- ✓ मुख मौन से भी सेवाओं में सहज सफलता प्राप्त होगी।
- ✓ बाबा ने यज्ञ रच कर हमारे हाथ में दे दिया है, क्यूँ हमारे हाथ में दिया? इस विश्वास के साथ कि यह मेरे ब्राह्मण बच्चे यज्ञ कि सम्पूर्ण संभाल करेंगे ।
- ✓ जो सच्चे दिल से यज्ञ कि सेवा करते है, जो अपनी सेवाओं से दुसरो को संतुष्ट करते है, जो अपना भी त्याग कर के चाहे नींद का त्याग करना पड़े, चाहे अपने सुखो का त्याग करना पड़े जो दुसरो को सुख देते है उनका भाग्य बहोत अच्छा बन जाता है।
- ✓ इस समय संसार को सकास देना सब से बड़ा पुण्य कर्म है ।
- ✓ कहीं स्वयं को उलझाएं नहीं, ना सेवाओं के फील्ड में, सेवा बिना उलझाएं भी बहोत अच्छी तरह कि जा सकती है, सेवाओं में उलझन है मनुष्य को किस चीज कि? स्वार्थ, मेपन।